भारतीय ज्ञान -परंपरा में उत्तराखण्ड का योगदान

मुक्तिनाथ यादव

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पण्डित ललित मोहन शर्मा परिसर ऋषिकेश.

सार

भव्य हिमालय में बसे राज्य उत्तराखंड की एक समृद्ध और वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक विरासत है, जिसकी जड़ें इसके पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों में गहराई से निहित हैं। उत्तराखण्ड में लोक चिकित्सा, पारंपरिक कृषि, आध्यात्मिक प्रथाओं, हस्तशिल्प और अन्य विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं जो भारतीय ज्ञान परंपरा में उत्तराखण्ड की महत्वपूर्ण स्थिति को प्रकट करते हैं। आज आवश्यकता है कि भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में उत्तराखंड के महत्वपूर्ण योगदान को उजागर और उनका दस्तावेजीकरण किया जाए। उत्तराखण्ड की अनूठी प्रथाओं, ज्ञान और विरासत पर प्रकाश डाला जाए ताकि व्यापक पैमाने पर इसके संरक्षण और संवर्द्धन को सुनिश्चित किया जा सके।

उत्तराखण्ड में पारंपरिक ज्ञान के विविध क्षेत्र

1. लोक औषधि

उत्तराखंड में लोक चिकित्सा की एक समृद्ध परंपरा है, जिसमें हर्बल उपचार और प्रथाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। यह क्षेत्र पौधों और उनके औषधीय गुणों के बारे में पीढ़ियों से चले आ रहे स्वदेशी ज्ञान के लिए जाना जाता है।

2. पारंपरिक कृषि

क्षेत्र की अनूठी स्थलाकृति और जलवायु परिस्थितियों के कारण उत्तराखंड में कृषि पद्धतियां यहां के पारंपरिक ज्ञान में गहराई से जुड़ी हैं। पारंपरिक खेती के तरीके, फसल की किस्में और जल संरक्षण तकनीकें उत्तराखंड में पारंपरिक कृषि-ज्ञान का हिस्सा हैं।

3. आध्यात्मिक अभ्यास

उत्तराखंड एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक केंद्र है जहां ढेर सारे मंदिर, तीर्थ स्थल और आध्यात्मिक प्रथाएं इसकी संस्कृति में गहराई से समाहित हैं। पारंपरिक आध्यात्मिक प्रथाएं और अनुष्ठान उत्तराखण्ड की जीवनशैली का अभिन्न अंग हैं।

4. हस्तशिल्प और कला

लकड़ी का काम, पत्थर की नक्काशी, ऊनी हस्तशिल्प और टोकरी बनाना, तांबे तथा लोहे पर आधारित अन्य हस्तशिल्प उत्तराखण्ड की रचनात्मकता, कौशल और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। ये शिल्प पीढ़ियों से चले आ रहे हैं और लगातार फल-फूल रहे हैं। इनके संरक्षण की आवश्यकता है।

5. पर्यावरणीय ज्ञान

उत्तराखंड के स्थानीय समुदायों के पास पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं, पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ जीवन (sustainable living) शैली के बारे में बहुमूल्य ज्ञान हैं। इस ज्ञान की जड़ें प्राकृतिक परिवेश के साथ उनके संबंध में गहराई से निहित हैं।

6. विविध उत्पाद

अब तक उत्तराखण्ड के 27 उत्पादों को जी0आई0 दर्जा प्रदान किया जा चुका है। उत्तराखण्ड की चैलाई, झंगोरा, मंडुआ, लाल चावल, अल्मोड़ा की लखोड़ी चिल्ली, बेरीनाग की चाय, बुरांश शरबत, रामनगर की लीची, रामगढ़ पीच, माल्टा, पहाड़ी तुर, गहत की दाल, कालाभट्ट, बिच्छू बूटी का फैब्रिक, नैनीताल की कैन्डिल, कुमायूं की रंगीन पिछोड़ा, चमोली का रम्मन मास्क तथा लिखाई वुड कार्विंग को इस वर्ष जी0आई0 टैग प्राप्त हुआ है। 1 उत्तराखण्ड के नौ उत्पादों- तेजपत्ता, बासमती चावल, अइपन कला, मुनिस्यारी का सफेद राजमा, रिंगाल का हस्तशिल्प, थुल्मा, भोटिया दान, च्यूरा तेल तथा तांबे के उत्पादों को पहले से ही यह दर्जा मिल चुका है। यह सब उत्तराखण्ड राज्य की समृद्ध ज्ञान परंपरा की झांकी प्रस्तुत करते हैं।

बहुत लंबे समय से भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के प्रति पश्चिमी विज्ञान का रवैया पूर्वाग्रहपूर्ण था जो उसे महज अंधविश्वास, किवदंती और मिथक कह कर खारिज कर देता था। उनके द्वारा बहुत बाद में भारतीय ज्ञान प्रणालियों को उनके वैज्ञानिक नवाचारों, मूल्यों और उपयोगिता के लिए स्वीकृति प्रदान की गई। वे अब अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय द्वारा मान्य हैं। ये प्रणालियाँ देशज लोगों के सदियों के अनुभव से विकसित हुई। ये लोग चुनौतीपूर्ण वातावरण में रहने के फलस्वरूप अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए उपयुक्त कौशल, तकनीकों और दवाओं को विकसित करने में सक्षम थे।

मध्य हिमालय क्षेत्र में स्थित, उत्तराखंड एक समृद्ध जैव विविधता वाला स्थान है। यह पहाड़ी राज्य वास्तुकला, हाइड्रोलिक्स, एथनो-मेडिसिन, एथनो-बॉटनी, धातु विज्ञान और कृषि के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान रखता है। यहां आज भी, हजारों साल पुरानी, बहुमंजिला इमारतें हैं जो समय की कसौटी और विनाशकारी भूकंपों का सामना कर चुकी हैं। ये चमत्कार भारतीय वास्तुकला का हिस्सा हैं, जो भूकंपीय ऊर्जा को फैलने से रोकने के लिए हमारे सामने उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

इसीप्रकार पारंपरिक हाइड्रोलिक्स-नौला (झरने वाले कुएं), घराट (जल मिलें) और सिंचाई चैनलों की एक विस्तृत श्रृंखला का मामला लें। उत्तराखण्ड के लोग सदियों से भूमिगत जलभृतों को रिचार्ज करने के लिए इन कुशल जल संचयन प्रौद्योगिकियों को विकसित किया, जिसके लिए उन्होंने पहाड़ की चोटियों के पास केवल 'चाल' और 'खाल' का उपयोग किया। यहां झरने और कुओं को मंदिर के समान पवित्र माना जाता था और उनके लिए कई अनुष्ठान किए जाते थे। यह पवित्रता का भाव लोगों को उन्हें साफ़ रखने के लिए विवश करता था। स्थानीय समुदायों ने कम ज्ञात फसलों और औषधीय पौधों की भी खेती की। यह जैव विविधता आनुवंशिकी के साथ-साथ स्वास्थ और एक संतुलित जीवन शैली के लिए बहुत महत्व रखती है।

भव्य हिमालय में बसे राज्य उत्तराखंड की एक समृद्ध और वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक विरासत है, जिसकी जड़ें इसके पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों में गहराई से निहित हंै। उत्तराखण्ड में लोक चिकित्सा, पारंपरिक कृषि, आध्यात्मिक प्रथाओं, हस्तशिल्प और अन्य विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं जो भारतीय ज्ञान परंपरा में उत्तराखण्ड की महत्वपूर्ण स्थिति को प्रकट करते हंै। आज आवश्यकता है कि भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में उत्तराखंड के महत्वपूर्ण योगदान को उजागर और उनका दस्तावेजीकरण किया जाए। उत्तराखण्ड की अनूठी प्रथाओं, ज्ञान और विरासत पर प्रकाश डाला जाए ताकि व्यापक पैमाने पर इसके संरक्षण और संवर्द्धन को सुनिश्चित किया जा सके।

हाल के अध्ययनों से यह भी पता चला है कि उत्तराखण्ड में ग्रामीण स्तर पर स्थानीय अयस्कों, उच्च श्रेणी के गोइथाइट, मैग्नेटाइट और पाइराइट का उपयोग करने वाला एक व्यापक लोहा और तांबा उद्योग है। कुछ दशक पहले तक कुमाऊं क्षेत्र के लोहाघाट क्षेत्र में जंग रहित लोहे के बर्तन बनाए जाते थे। ऐसे अनेक अध्ययनों से उत्तराखण्ड में प्रचलित समृद्ध ज्ञान प्रणाली पता चला है। 2,3,4,5,6,7,8,9,10,11

पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को आज धीरे-धीरे आधुनिक जीवनशैली द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है। कंक्रीट संरचनाओं के उद्भव के कारण पारंपरिक वास्तुकला तेजी से विलुप्त हो रही है; हाइड्रोलिक प्रौद्योगिकियों को पाइपों और हैंडपंपों के नेटवर्क द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है; पारंपरिक औषधीय प्रणालियों ने एलोपैथिक उपचार का मार्ग प्रशस्त कर दिया है; और, नॉन-स्टिक कुकवेयर द्वारा पारंपरिक धातु विज्ञान को मिटा दिया गया है। साथ ही, प्रमुख दवा कंपनियों द्वारा प्राचीन औषधीय पौधों का पेटेंट कराया जा रहा है, जो स्थानीय समुदायों के साथ लाभ साझा नहीं करते हैं, जिनके निवास स्थान से वे पौधे प्राप्त करते हैं। इसलिए एक ओर इन पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का दस्तावेजीकरण और पेटेंट कराने की आवश्यकता है, और एक ऐसा तंत्र विकसित

करना महत्वपूर्ण है ताकि इन प्रणालियों से बड़े पैमाने पर यहां के समुदाय को लाभ हो। यहां का पारंपरिक ज्ञान उत्तराखण्ड के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को बदलने की क्षमता रखता है।

आज भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में उत्तराखंड के बहुमूल्य योगदान की व्यापक समझ विकसित करना है। इस पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेज़ीकरण और प्रसार, इसके संरक्षण और सतत उपयोग के लिए अति महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी के कारण ही उत्तराखंड के अनूठी विरासत की राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर सराहना की जाती है।

उत्तराखंड में पारंपरिक ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का अन्वेषण करना और उनका दस्तावेजीकरण करना बहुत जरुरी है। इसके लिए उत्तराखंड में कृषि और खेती से संबंधित पारंपरिक वैज्ञानिक प्रथाओं की पहचान करना होगा और उनका दस्तावेजीकरण करना होगा। साथ-साथ उत्तराखंड में औषधीय पौधों और पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं के उपयोग और उनके वैज्ञानिक आधार का विश्लेषण भी करना होगा। उत्तराखंड के स्थानीय समुदायों द्वारा बहुत सारे पर्यावरणीय ज्ञान और प्रथाओं का पालन किया जाता है। उनका पता लगाना होगा। यहां की स्थानीय प्रौद्योगिकियों और आधुनिक समय में उनकी प्रासंगिकता की जांच करना होगा। उन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय कारकों को उजागर करना होगा , जिन्होंने उत्तराखण्ड में पारंपरिक ज्ञान को प्रभावित किया है। उत्तराखण्ड में कई स्थानीय समुदाय हैं जो पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने में सदियों से अपना योगदान दे रहे हैं उनकी पहचान करनी होगी। किन्तु यह सब उत्तराखंड में पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन के लिए चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा किये बिना संभव न होगा।

स्पष्ट है कि भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में उत्तराखंड का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और विविधतापूर्ण है। समाज, संस्कृति और पर्यावरण हित के लिए उत्तराखण्ड में मौजूद पारंपरिक ज्ञान की संपदा के संरक्षण और संवर्द्धन के उपायों को प्रात्साहित करने की आवश्यकता है। लोगों को उत्तराखंड की अनूठी विरासत को जानने, सीखने और समझने में मदद करने की जरुरत है, क्योंकि इससे उत्तराखंड राज्य के पारंपरिक ज्ञान के महत्व को प्रोत्साहन मिलेगा और उसके प्रति सम्मान और आदर्श बढ़ेगा। उत्तराखंड में पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन के लिए नीति निर्धारण एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन, जागरुकता कार्यक्रमों व पारंपरिक ज्ञान को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करने में सहायता प्राप्त होगी। सतत विकास के लिए पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकृत करने की क्षमता को उजागर करने की आवश्यकता है। उत्तराखंड की स्वदेशी प्रथाओं और ज्ञान पर प्रकाश डालने की जरुरत है, जिन्हें अक्सर आधुनिक वैज्ञानिक चर्चा में नजरअंदाज कर दिया जाता है।

निष्कर्ष

भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में उत्तराखंड का योगदान अमूल्य है। इस पारंपरिक ज्ञान को पहचानना, संरक्षित करना और बढ़ावा देना न केवल राज्य के लिए बल्कि पूरे देश के लिए आवश्यक है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी भविष्य और पारंपरिक ज्ञान की समृद्ध श्रृंखला सुनिश्चित की जा सके।

References

1-Times of India Dec 5, 2023
2-Tradional ecological Knowledge of Uttarakhand (India)- A futuristic approach: January 2013. Ecology Environment and Conservation 19(3) 801-804. By Shikha Gairola
3-Environment and Traditional Knowledge Systems of Uttarakhand: History Research Journal: Volume 5 issue 05 September-October 2019 by Dr. Manju Bisht
4-Time to revive our traditional knowledge Systems: Down to Earth Magzine: 1-15 Sept. 2016 by D.P. Agarwal, Kailash Rautela
5-Traditional knowledge Systems in sustainable eco-development: an Uttarakhand Perspective: A book: Traditional Ecological Knowledge of Mountaion People(Ed. N.K. Joshi, V. Singh) 2010 pp. 175-195
6-A study of non-literate traditional knowledge systems of Uttarakhand. International Journal of Scientific Research in Science, Engineering & Technology, Vol. 3, Issue 8, pp, 1382-1390 in 2017 by Manju Bisht
7-Traditional Knowledge Systems and Archaeology withspecial reference to Uttarakhand by D.P. Aggrawal et.al.(2017) Aryan Books International
8-Ethno-medicinal Diversity and Traditional Knowledge Systems of the Jaunsari Tribe in Uttarakhand, Western Himalayas. Proceeding of the National Academy of Sciences, India in September 2023.
9-Traditional Food knowledge of local people and its sustainability in mountain of Uttarakhand state of India, Journal of social and economic development 25,pp. 32-51(2023) by C.P. Kala
10- Popular ITK(Indian Technical Knowledge) practices in Kumaon region of Uttarakhand by B.D. Singh & Shashank Tyagi, Asian-Agri-History , Vol. 18,Issue 1, pp.43-51 (2014)
11- Traditional Knowledge and indigenous practices still in vogue among rural populace of Garhwal Hills, Uttarakhand. By Gaurav et.al. Journal of Pharmacognosy and Photochemistry sp9nppn145-147, (2020)